

तैयारियों को मूर्तरूप देने में जुटी समितियां, शहर में दो स्थानों पर 20 अक्टूबर को किया जाएगा रावण दहन

किला ग्राउंड के चारो और घूमेगा रावण आकर्षण का केन्द्र रहेंगी आतिशबाजी



मृदुभाषी, सिटी रिपोर्टर

धार। अधर्म पर धर्म की जीत के प्रतीक दशहरा पर्व पर 20 अक्टूबर को दो स्थानों पर रावण के पुतले का दहन किया जाएगा। घोड़ा चौपाटी से सटे नौगांव के किला मैदान पर सार्वजनिक दशहरा उत्सव समिति द्वारा हर वर्ष की तरह रावण दहन होगा तो दशहरा मैदान में नगर पालिका

रावण दहन करेंगी। दशहरा मैदान व नौगांव में रावण के पुतले बनाने का कार्य इन दिनों जोरों पर चल रहा है। दशहरा मैदान में जंगली घास की कटिंग का कार्य नगर पालिका कर रही है। इधर नौगांव स्थित किले मैदान में रावण के पुतले का विधिवत पूजन करके पुतला निर्माण कार्य किया गया है। मैदान को दुरुस्त करने की प्रक्रिया चल रही है।

51 फीट ऊंचा रावण का पुतला चारो ओर घूमेगा

समिति के संयोजक भगत सिंह चौहान बताते हैं की समिति का यह 48 वा वर्ष है। समिति हर वर्ष दर्शकों को आकर्षित और कार्यक्रम को विशाल बनाने के लिए रावण के पुतले का श्रेष्ठ निर्माण करवाती है। इस बार रावण का पुतला 51 फीट होकर चारो ओर घूमने वाला बनाया गया है ताकि लोग कही से भी रावण दहन कार्यक्रम का लुप्त उठा सके। यह कार्यक्रम सालो से चला आ रहा है इसमें शहर के हर कोने से आसपास के गमीण जनता देखने आते है। इसबार रावण दहन नारी शक्ति पर वह पानी की बचत पर संदेश देते हुए आधारित रहेगा। इस वर्ष कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जयप्रकाश आर्य तथा योगेन्द्र सिंह बुदिला

अध्यक्षता करेंगे। समिति के संरक्षक पर्वत सिंह चौहान तथा कुलदीप सिंह बुदिला ने नगर तथा आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की उत्सव प्रेमी जनता से उपस्थित रहकर कार्यक्रम को सफल बनाने कि निवेदन किया है । यह जानकारी मीडिया प्रभारी मनोज चौहान ने दी ।

नन्हें मुन्ने बच्चों के लिए भी विशेष पटाखों से आतिशबाजी

सार्वजनिक दशहरा उत्सव समिति नौगांव के मनोज चौहान ने बताया कि रावण दहन कार्यक्रम में विशेष रूप से आतिशबाजी लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र रहती है। समिति द्वारा इस वर्ष आतिशबाजी पर विशेष जोर दिया गया है। समिति के सदस्य बताते हैं कि हर वर्ष आतिशबाजी का श्रेष्ठ प्रदर्शन समिति द्वारा कराया जाता है लेकिन इस बार आतिशबाजी पर विशेष जोर दिया जा रहा है ताकि लोग समय पर पहुंचकर आतिशबाजी का लुप्त उठा सके। समिति द्वारा कराई जाने वाली आतिशबाजी में नन्हें मुन्ने बच्चों के लिए भी विशेष पटाखों से आतिशबाजी की जाएगी। समिति के संयोजक भगतसिंह चौहान ने नगर की जनता से अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर आयोजन को सफल बनाने की

अपील की है ।

51 फिट के पुतले का दहन

नगर पालिका अध्यक्ष नेहा महेश बोडाने ने बताया कि इस साल 51 फीट रावण का दहन करेंगी। रावण बनाने का कार्य चल रहा है। कार्यक्रम को लेकर तैयारी चल रही है। दहन के पूर्व मैदान में आतिशबाजी लोगों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहेगी। यहां पर हिन्दू उत्सव समिति द्वारा राम, लक्ष्मण, हनुमान की झांकी का जुलूस भी मैदान पर आएगा और शाम 7 बजे रावण दहन किया जाएगा। इस बार जल संरक्षण के साथ स्वच्छता का संदेश देते हुए रावण दहन किया जाएगा ।

360 डिग्री तक घूमेगा पुतला

सार्वजनिक दशहरा उत्सव समिति नौगांव समिति के मीडिया प्रभारी मनोज चौहान ने बताया किला मैदान में राऊ के कलाकार द्वारा रावण का 51 फिट पुतला बनाया जा रहा है। इस बार रावण 360 डिग्री तक घुमेंगे। इसके साथ आतिशबाजी भी रहेगी। कार्यक्रम संयोजक भगतसिंह चौहान के मार्गदर्शन में किया जाएगा। इसके साथ ही रावण दहन के लिए राम, लक्ष्मण, हनुमान की वानर सेना आएगी। दहन को

लेकर किला मैदान में तैयारियां की जा रही है। मैदान की साफ-सफाई व गाजर घास हटाई जा रही है।

48 वर्ष से मनाया जा रहा है दशहरा का पर्व

उल्लेखनीय है कि आज के युग में भारत देश में अनेकों जगह आए दिन सांप्रदायिक सोहार्द को बिगाड़ने की खबरे आम तौर पर देखी जाने लगी है, लेकिन इन सब के बीच धार जिले में सार्वजनिक दशहरा उत्सव समिति ने बीते 48 वर्षों से लोगों के मन में सांप्रदायिक सद्भाव एवं सोहार्द बनाकर एक मिशाल कायम की है। समिति के संयोजक भगत सिंह चौहान ने आज तक इन अलग अलग धर्मों के लोग रूपी मोती को एक माला में पिरोए रखने का काम किया है। यही कारण है को आज 48 बरस बीत जाने के बाद देश में अनेकों सांप्रदायिक तनाव के बाद भी आज तक समिति अपने कार्यों को निर्विवाद रूप से करती आ रही है, आज के समय में समिति में हर वर्ग के लोग अपना श्रम लगाकर कार्यक्रम को सफल बनाने में लगे हुई है। समिति की खास बात यह भी है की इस कार्यक्रम को राजनीति से दूर रखा गया है और प्रतिष्ठित लोग इससे जुड़े हुए है।



सिखाया है कि नारी केवल ममता की मूर्ति नहीं, वह आवश्यकता पड़ने पर चंडिका भी बन सकती है। आज की दुर्गा वाहिनी वही चंडिका का रूप है।

आप माँ लक्ष्मी है, किन्तु माँ दुर्गा भी आपको बनना है

उन्होने माताओं-बहनों से आह्वान करते हुए कहा कि आप घर की लक्ष्मी हैं, लेकिन वक्त आने पर दुर्गा भी आपको ही बनना है। अपनी बेटियों को दुर्गा वाहिनी से जोड़िए। उन्हें आत्मरक्षा सिखाइए, उन्हें शास्त्र और शास्त्र दोनों का ज्ञान दीजिए। शास्त्र पूजन हमें याद दिलाता है कि हम शांति चाहते हैं, लेकिन कायरता नहीं। हम हाथ में माला भी रखेंगे और आवश्यकता पड़ने पर भाला भी। यहां की बेटियां अखाड़ा भी खेलती है।

विधायक की नाराजगी के बाद जागा प्रशासन, लगाया हैंडपंप

मृदुभाषी, सिटी रिपोर्टर

जोबट। विधानसभा क्षेत्र के छोटा इटारा में पेयजल समस्या को लेकर आखिरकार प्रशासन और संबंधित विभाग हरकत में आए। जोबट विधायक सेना महेश पटेल की नाराजगी के बाद गांव में हैंडपंप लगाया गया।

गौरतलब है कि इससे पहले सोजावाड़ा में आयोजित जनविश्वास शिविर के दौरान विधायक सेना महेश पटेल ने गंदे पानी का वीडियो दिखाकर पीएचई विभाग की व्यवस्था पर सवाल उठाए थे। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल संकट और अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर नाराजगी जताते हुए लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर जोर दिया था। इसी क्रम में छोटा इटारा में पानी की



समस्या को लेकर भी कार्रवाई हुई और हैंडपंप लगाया गया। इससे ग्रामीणों को पेयजल संकट से राहत मिलने की उम्मीद है। सवाल यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल जैसी मूलभूत सुविधा के लिए लोगों को इंतजार क्यों करना पड़ता है? यदि समय पर समस्याओं का समाधान हो, तो ग्रामीणों को अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए परेशान नहीं होना पड़ेगा।

वेदा नदी पर ठप पड़ा है पुल निर्माण बारिश के बाद भी शुरु नहीं हो पाया निर्माण, 50 साल पुराने पुल से निकल रहे लोग

मृदुभाषी, सिटी रिपोर्टर

कसरारवद। दोगावां मार्ग पर वेदा नदी में निर्माणधीन नए पुल का काम लंबे समय से धीमी गति से चल रहा है। बारिश का दौर खत्म होने को है, लेकिन पुल का अधिकांश स्लैब अब तक नहीं जुड़ पाया है। बारिश से पहले बंद हुआ निर्माण कार्य अभी तक दोबारा शुरू नहीं हो सका है। मौके पर न मजदूर नजर आ रहे हैं और न ही निर्माण कंपनी के जिम्मेदार अधिकारी। ऐसे में पुल का निर्माण कब तक पूरा होगा, इसे लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है।

मुख्य सड़क मार्ग पर बन रहे इस पुल का काम शुरू से ही धीमी गति से चल रहा है। पुल के मुख्य बेसमेंट का स्लैब भी कई दिनों से अधूरा पड़ा है। निर्माण कार्य बंद होने से क्षेत्र के लोगों और वाहन चालकों की परेशानी बढ़ रही है। नए पुल के तैयार नहीं होने के कारण राहगीरों को करीब 50 साल पुराने पुल से आवागमन करना पड़ रहा है। पुराने पुल पर कई स्थानों पर



गड्डे होने के कारण लोहे की प्लेटें लगाई गई हैं। ऐसे में पुल से गुजरना वाहन चालकों के लिए परेशानी भरा बना हुआ है।

लोडिंग वाहनों की आवाजाही से बढ़ रही परेशानी

इस मार्ग से निजी यात्री बसों के साथ बड़ी संख्या में छोटे-बड़े और लोडिंग वाहन

गुजरते हैं। यह मार्ग सनावद, बड़वाह, मुलठान, खामखेड़ा, कसरारवद और खरगोन सहित आसपास के क्षेत्रों को जोड़ता है। भारी वाहनों की आवाजाही के बीच पुराने पुल की जर्जर स्थिति चिंता बढ़ा रही है। नए पुल का निर्माण समय पर पूरा नहीं होने से वाहन चालकों को इसी पुराने रास्ते से निकलना पड़ रहा है। जिससे उन्हें परेशानी हो रही है।

जुआरियों से 24 हजार सहित 8 बाइक जब्त

मृदुभाषी, सिटी रिपोर्टर

शाजापुर। शुजालपुर मंडी पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 8 जुआरियों को जामनेर के जंगल से जुआ खेलते गिरफ्तार किया है। जिनके पास से 8 लाख 85 हजार का मशरूका जब्त किया है। यह सफलता पुलिस की मुखबिर की सूचना पर मिली। जिसने शुजालपुर मंडी पुलिस द्वारा आंशिक पिता लाल खां (22) निवासी जामनेर, शाहब पिता अलताफ खां (35) निवासी शुजालपुर सिटी, रंजीत पिता कनीराम सेनी (50)

पुलिस टीम ने मौके पर 8 व्यक्तियों को ताश के पत्तों पर रुपये-पैसों का हार-जीत का दांव लगाकर जुआ खेलते हुए पकड़ा।

पुलिस ने सभी 8 आरोपियों को गिरफ्तार किया तथा उनके कब्जे से 24 हजार 600 नगद, 52 ताश के पत्ते, 8 मोटर साइकिल एवं 6 मोबाइल फोन सहित कुल 8 लाख 85 हजार का माल जब्त किया है। पुलिस द्वारा आंशिक पिता लाल खां (22) निवासी जामनेर, शाहब पिता अलताफ खां (35) निवासी शुजालपुर सिटी, रंजीत पिता कनीराम सेनी (50)

निवासी शुजालपुर मंडी, मदन पिता लच्छू भोई (50) निवासी शुजालपुर मंडी, गोल्ड उर्फ शमशाद पिता इरफान खां (38) निवासी शुजालपुर, आर्यन पिता राधेश्याम प्रजापत (21) निवासी शुजालपुर मंडी, इरशाद पिता शफीक खां (36) निवासी शुजालपुर मंडी व सद्दाम उर्फ सईद उर्फ भूरा पिता गफ्फार खां (32) वर्ष निवासी ग्राम जामनेर को गिरफ्तार किया गया है। जिनके खिलाफ थाने में जुआ एक्ट के अंतर्गत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया है।

मृदुभाषी, सिटी रिपोर्टर

देपालपुर। कीर समाज की वीरांगना पुरी माँ कीर की जयंती के आयोजन की तैयारियों को लेकर देपालपुर में वीरांगना पुरी माँ कीर टीम की बैठक आयोजित की गई। इसमें आगामी समारोह की रूपरेखा पर चर्चा करते हुए आयोजन को भव्य और व्यवस्थित बनाने के लिए विभिन्न बिंदुओं पर रणनीति तय की गई।

बैठक में वक्ताओं ने वीरांगना पुरी माँ कीर के शौर्य, साहस और पराक्रम का स्मरण करते हुए उन्हें समाज का गौरव और प्रेरणास्रोत बताया। उन्होंने कहा कि उनके



जीवन और ऐतिहासिक योगदान से नई पीढ़ी को परिचित कराना आवश्यक है, ताकि उनके आदर्शों और वीरता की गाथा समाज तक पहुंच सके। बैठक में बताया गया कि

वीरांगना पुरी माँ कीर का जन्म विक्रम संवत 1768 की नवमी तिथि को हुआ था। उनकी जयंती प्रतिवर्ष उत्साह के साथ मनाई जाती है।

विभिन्न पहलुओं पर विनर्श

देपालपुर के साथ इंदौर, उज्जैन, सांवर, हरदा और भोपाल सहित राजस्थान, महाराष्ट्र तथा गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों में भी जयंती समारोह आयोजित किए जाते हैं। इस वर्ष समारोह को सफल बनाने के लिए तैयारियां तेज कर दी गई हैं। बैठक में आयोजन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया और समाजजनों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया। बैठक में उपस्थित सदस्यों ने समारोह को सफल बनाने तथा वीरांगना पुरी माँ कीर के शौर्य और योगदान को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प व्यक्त किया।

अनुकरणीय

स्वर्गीय प्रभाकर मिश्र गुरुजी ने रखी थी परंपरा की नींव

43 वर्षों की अमर गाथा जागृति दुर्गा पूजा महोत्सव

मृदुभाषी, सिटी रिपोर्टर

अनूपपुर। कुछ परंपराएं केवल धार्मिक आयोजन नहीं होतीं, बल्कि वे किसी नगर की पहचान, उसकी सांस्कृतिक विरासत और पीढ़ियों की भावनाओं का जीवंत इतिहास बन जाती हैं। अनूपपुर का जागृति दुर्गा पूजा महोत्सव भी ऐसी ही एक गौरवशाली परंपरा है, जो इस वर्ष अपने 43वें वर्ष में प्रवेश कर श्रद्धा, भक्ति, सामाजिक समरसता और सामूहिक समर्पण की अनूठी मिसाल प्रस्तुत कर रहा है। चार दशकों से अधिक की इस यात्रा में मां भगवती के प्रति अटूट आस्था के साथ अनेक विभूतियों का त्याग, परिश्रम और निष्ठा जुड़ी हुई है। जागृति दुर्गा पूजा महोत्सव की स्थापना और उसे विशिष्ट पहचान दिलाने का श्रेय स्वर्गीय

प्रभाकर मिश्र गुरुजी को जाता है। उनके संकल्प ने एक ऐसे धार्मिक आयोजन की नींव रखी, जो समय के साथ अनूपपुर नगर की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। उनके द्वारा रोपित आस्था का यह पौधा आज विशाल वृक्ष का रूप ले चुका है, जिसकी छांव में नई पीढ़ी भी अपनी परंपराओं, संस्कारों और सामाजिक एकाई के मूल्यों को आत्मसात कर रही है।

पूर्वजों का मार्गदर्शन बना मजबूत आधारशिला

इस महोत्सव की गौरवपूर्ण यात्रा में अनेक दिवंगत विभूतियों का योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। स्वर्गीय गिरिजा प्रसाद मिश्र का प्रारंभिक दौर से प्राप्त सानिध्य और मार्गदर्शन आयोजन की महत्वपूर्ण शक्ति रहा। वहीं,



स्वर्गीय लक्ष्मपत प्रसाद त्रिपाठी ह्रामदगार ह्म ने संरक्षक के रूप में समिति को संवल प्रदान किया। स्वर्गीय पुरुषोत्तम दास मिश्र की कर्मठता और समर्पण ने महोत्सव को मजबूती दी, जबकि स्वर्गीय एच.एस. दास ने पूजा कार्यक्रम के स्वरूप को निखारे और उसे भव्यता प्रदान करने में विशेष योगदान दिया इन सभी विभूतियों का जीवन और योगदान इस बात का प्रमाण है कि किसी परंपरा को स्थापित करना जितना कठिन होता है, उसे निरंतर जीवंत बनाए रखना

उससे भी बड़ी जिम्मेदारी होती है।

वरिष्ठ सदस्यों की निष्ठा से आगे बढ़ती रही परंपरा

महोत्सव को व्यवस्थित, संगठित और निरंतर संचालित करने में समिति के वरिष्ठ एवं प्रमुख सदस्यों की भूमिका भी उल्लेखनीय रही है। कन्हैयालाल मिश्र, उमेश सिंह, घनश्याम राजपूत, अरुण कुमार मिश्र, डॉ. चंद्रकांत गर्ग, मुख्य कार्यकारी सदस्य राजेंद्र वर्मन, भरत रैकवार तथा विद्युत सुरक्षा विभाग से जुड़े अरुण

कर्मकार सहित अन्य निष्ठावान सदस्यों ने अपने सहयोग, श्रम और समर्पण से इस परंपरा को आगे बढ़ाने में योगदान दिया है इन सदस्यों की सहभागिता यह संदेश देती है कि धार्मिक आयोजनों की वास्तविक भव्यता केवल साज-सज्जा या विशाल पंडालों में नहीं, बल्कि उन लोगों की निस्वार्थ सेवा में निहित होती है, जो पदों के पीछे रहकर आयोजन को सफल बनाते हैं। आज जागृति दुर्गा पूजा महोत्सव केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अनुपूरु की सांस्कृतिक चेतना, पारिवारिक जुड़ाव और सामाजिक समरसता का प्रतीक बन चुका है। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि वरिष्ठ पीढ़ी के अनुभव और युवा पीढ़ी के उत्साह का समन्वय इस विरासत को आगे बढ़ा रहा है।

माँ नर्मदा आश्रय स्थल पर कन्या पूजन के साथ किया गया विशाल भंडारा सप्तमी के अवसर पर किया गया कार्यक्रम

मृदुभाषी, सिटी रिपोर्टर

मंडलेश्वर। शक्ति की आराधना के पर्व नवरात्रि में नगर में धार्मिक उल्लास एवं श्रद्धा का माहौल है। इस पावन अवसर पर कन्या पूजन एवं कन्या भोज का विशेष महत्व है। इसी परंपरा के अंतर्गत नर्मदा तट स्थित माँ नर्मदा आश्रय स्थल पर प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी सप्तमी के पावन अवसर पर कन्या पूजन एवं विशाल भंडारे का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ सर्वप्रथम माँ नर्मदा जी के विधि-विधान से पूजन एवं आरती के साथ किया गया। इसके पश्चात छोटी-छोटी कन्याओं का विधि-विधान से पूजन कर उन्हें भोजन प्रसादी कराई गई। उपस्थित आश्रय स्थल परिवार के सदस्यों ने कन्याओं का



पूजन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर आश्रय स्थल परिवार से श्रावणी रत्नदीप, मोयदे,संगीता आशीष दुबे,मनीषा धनंजय शर्मा, निशा आलोक डोंगरे, शैली सौरभ शुक्ला,रेणुका लोकेश सोनी,रिक्की ऋतु तवर एवं शानू कार्तिक डोंगरे सहित नगर परिषद अध्यक्ष विश्वदीप मोयदे ने अपनी धर्मपत्नी जया मोयदे के साथ कन्याओं का पूजन

किया। इसके साथ ही कंचन सोलंकी, प्रवर जैन, ओम नामदेव, रोहित कुमरावत, प्रवेश पंचोली, संजय राठोड़, विनायक सोनी, हरि कर्मा एवं राजपाल ठाकुर ने भी कन्या पूजन कर धर्मलाभ प्राप्त किया।माँ नर्मदा जी के पूजन-अर्चन,आरती,कन्या पूजन एवं भोजन प्रसादी के साथ पूरा आयोजन श्रद्धा, भक्ति और सेवा भाव से संपन्न हुआ।

रविवार को माँ बगलामुखी मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट के जज, प्रदेश सरकार के मंत्री गौतम टेटवाल सहित कई वीआईपी भी दर्शनार्थ पहुंचे। जिन्होंने माता रानी के दर्शन किये गए। कुछ वीआईपी द्वारा मंदिर परिसर में हवन अनुष्ठान भी किया गया। शारदीय नवरात्रि पर्व के अंतिम दिन नवमी पर्व पर आज सोमवार को

मारुति शोरूम से भुल्लनपुरा तक बनेगा फोरलेन

मृदुभाषी, सिटी रिपोर्टर

गुना। रफ़तार पकड़ती आबादी, सड़कों पर बढ़ता वाहनों का दबाव और रोज-ब-रोज लगने वाले लंबे ट्रैफ़िक जाम गुना शहर अब अपनी पुरानी सीमाओं से बाहर निकलकर एक नया रूप लेने के लिए पूरी तरह तैयार है। आने वाले दिनों में गुना की सड़कें न सिर्फ़ चौड़ी और चमचमाती नजर आएंगी, बल्कि शहर के भीतर ट्रैफ़िक का दबाव भी न के बराबर रह जाएगा।

शहर के इसी कायाकल्प और मास्टर प्लान को धरातल पर उतारने के लिए कलेक्टर

किशोर कुमार कन्याल अचानक एक्शन मोड में नजर आए। उन्होंने अधिकारियों के पूरे अमले के साथ शहर के प्रमुख चौराहों, सड़कों और निमाणार्थीन मार्गों का बारीकी से निरीक्षण किया। निरीक्षण का मुख्य केंद्र मारुति शोरूम से लेकर भुल्लनपुरा तक का इलाका रहा। लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) के अधिकारियों ने मौके पर जानकारी देते हुए बताया कि इस पूरे मार्ग को फोरलेन बनाने का प्रारंभिक प्रस्ताव उच्च स्तर पर भेजा जा चुका है। प्रस्ताव की मंजूरी के साथ ही धरातल पर काम शुरू करने की रणनीति बनाई गई है।



परिजनों से बिछड़े बालक को सकुशल परिजनों से मिलाया

मृदुभाषी, सिटी रिपोर्टर

अशोकनगर। पुलिस अधीक्षक अशोकनगर राजीव कुमार मिश्रा के निर्देशन में जिला पुलिस द्वारा आमजन की सुरक्षा एवं सहायता के लिए सतत तत्परता से कार्य किया जा रहा है।

इसी क्रम में 17 अक्टूबर 2026 की रात्रि लगभग 11:30 बजे नवदुर्गा झांकियों के दर्शन के दौरान अपने माता-पिता से बिछड़े 7-8 वर्षीय बालक को अशोकनगर पुलिस ने तत्परता एवं सूझबूझ का परिचय देते हुए सकुशल उसके परिजनों से मिलाया।

उल्लेखनीय है कि हाथी दरवाजा पर यातायात व्यवस्था हेतु ड्यूटी पर तैनात यातायात आरक्षक संजीत कुशवाह को एक बालक रोता हुआ मिला। बालक की पहचान कान्हा कुशवाह, पिता

अशोक कुशवाह, निवासी ब्राइट कॉलोनी के रूप में हुई। वह अपने माता-पिता के साथ नवदुर्गा झांकियों के दर्शन करने आया था, इसी दौरान भीड़भाड़ में अपने परिवार से बिछड़ गया था। यातायात आरक्षक संजीत कुशवाह द्वारा बालक को शांत कर उसके माता-पिता का नाम एवं निवास स्थान जानने का प्रयास किया गया, लेकिन घबराहट के कारण बालक स्पष्ट जानकारी नहीं दे पा रहा था। ऐसी स्थिति में यातायात आरक्षक संजीत कुशवाह ने थाना कोतवाली की चीता मोबाइल में ड्यूटी कर रहे आरक्षक पवन धाकड़ के साथ मिलकर बालक द्वारा बताए गए स्थानों के आधार पर उसके घर तक पहुंचने का प्रयास किया। दोनों आरक्षकों की सतर्कता एवं संवेदनशीलता से बालक को उसकी कॉलोनी के आसपास पहुंचाया गया।

शासकीय महाविद्यालय आरोन में सेवा संकल्प अभियान का समापन

मृदुभाषी, सिटी रिपोर्टर

गुना। शासकीय महाविद्यालय आरोन में 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक आयोजित एक माह लंबे सेवा संकल्प अभियान का समापन प्रमाण पत्र वितरण समारोह के साथ हुआ। इस दौरान महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने विभिन्न रचनात्मक, सामाजिक एवं जनजागरूकता संबंधी गतिविधियों में बढ़-चढ़कर उत्साहपूर्वक भाग लिया।महाविद्यालय के प्राचार्य

प्रो. एके मुदगल के मार्गदर्शन में संचालित इस अभियान के तहत विद्यार्थियों ने 'आशीर्वाद का दिया', 'मेरे सपनों का भारत', 'अनकही कहानी', 'आंगन मिलन', 'सेवा ज्योति कलश यात्रा', 'सेवा मेरा योगदान' एवं 'सेवा सेतु अभियान' जैसे कई महत्वपूर्ण विषयों पर अपनी प्रभावी प्रस्तुतियाँ दीं। इन सभी गतिविधियों का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के भीतर सामाजिक सेवा, राष्ट्र निर्माण, स्वच्छता, रचनात्मकता और

कलेक्टर ने निर्देश दिए कि सड़क चौड़ीकरण में बाधा बन रहे बिजली के खंभों की पोल् शिफ्टिंग प्रक्रिया तुरंत शुरू की जाए और एक स्पष्ट रोड एग्जीक्यूशन प्लान तैयार किया जाए। इसके साथ ही मारुति शोरूम से एसडीएम कार्यालय तक सड़क चौड़ीकरण की गुंजाइश का भी जगह-जगह रुककर जायजा लिया गया।

शहर से बाहर ही मुड़ जाएगा भारी ट्रैफिक

अब हाईवे से होकर गुजरने वाले बड़े वाहनों और लंबी दूरी की गाड़ियों को शहर के बीचों-बीच

बस स्टैंड और थाने के लिए नई जमीन की तलाश तेज, कलेक्टर के दौरे से महकमों में दौड़ी हलचल



आकर जाम लगाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। शहर के विस्तार को

अष्टभुजी माता मंदिर में 75 वर्षों से निरंतर हो रहा नवापारायण रामचरितमानस पाठ

मृदुभाषी, सिटी रिपोर्टर

अशोकनगर। नवरात्र के पावन अवसर पर अशोकनगर के विभिन्न मंदिरों में धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में शहर के प्रसिद्ध अष्टभुजी माता मंदिर में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी नवाह्न पारायण श्रीरामचरितमानस पाठ का आयोजन श्रद्धा और भक्ति के साथ किया जा रहा है। मंदिर में यह परंपरा पिछले लगभग 75 वर्षों से निरंतर चली आ रही है। वर्षों से चली आ रही इस धार्मिक परंपरा ने शहर के लोगों की आस्था को अपने साथ जोड़ रखा है।

नवरात्र के दिनों में अष्टभुजी माता मंदिर को आकर्षक ढंग से सजाया जाता है। यहां प्रतिदिन सुबह और शाम श्रीरामचरितमानस का सामूहिक पाठ होता है, जिसमें अशोकनगर के अनेक श्रद्धालु भाग लेते हैं। मंदिर के महंत धर्मदास जी ने बताया कि मंदिर में लगभग 70 से 75 वर्षों से निरंतर मानस पाठ की परंपरा चली आ रही है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी श्रद्धालु इस परंपरा से जुड़े रहे हैं और मां की आराधना के साथ प्रभु श्रीराम के आदर्शों का स्मरण करते आ



रहे हैं।

50 वर्षों से मानस पाठ का गायन कर रहे अशोक शर्मा

नवाह्न पारायण पाठ के आचार्य श्री अशोक शर्मा ने बताया कि वे स्वयं लगभग 50 वर्षों से अष्टभुजी माता मंदिर में रामचरितमानस पाठ का गायन कर रहे हैं। इतने लंबे समय से इस धार्मिक परंपरा से जुड़े रहना उनके लिए आस्था और सेवा का विषय है। उन्होंने बताया कि समय के साथ अनेक नए लोग इस पाठ से जुड़े, जबकि कई पुराने श्रद्धालु अब इस परंपरा का हिस्सा नहीं हैं। इसके बावजूद रामचरितमानस पाठ की यह परंपरा बिना किसी

व्यवधान के निरंतर आगे बढ़ती रही है।

इस धार्मिक आयोजन में शहर के अनेक प्रतिष्ठित लोग भी सहभागी रहे हैं। इनमें से कुछ लोगों ने आगे चलकर विधायक जैसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक पदों तक का सफर तय किया। यह आयोजन केवल धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं, बल्कि शहर की सामाजिक और सांस्कृतिक परंपरा का भी महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

महाआरती में गूंजते हैं मां के जयकारे

उन्होंने बताया कि अष्टभुजी माता मंदिर में नवाह्न पारायण

ध्यान में रखते हुए ऐसे वैकल्पिक मार्गों (बायपास/डायवर्जन) के चिन्हित करने पर जोर दिया जा रहा है, जिससे बाहरी वाहन शहर की सीमा में प्रवेश किए बिना ही अपने गंतव्य के लिए निकल जाएं। इससे न केवल शहर के अंदरूनी प्रमुख चौराहों पर लगने वाले लंबे जाम से मुक्ति मिलेगी, बल्कि आम जनता और वाहन चालकों के बहुमूल्य समय और ईंधन दोनों की भारी बचत होगी।

बस स्टैंड, थाना और नपा के लिए नई जमीन की तलाश

शहर के बुनियादी ढांचे (इन्फ्रास्ट्रक्चर) को मजबूत

करने के लिए अब प्रशासनिक और सार्वजनिक संस्थानों के विस्तार पर भी तेजी से काम शुरू हो चुका है। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने बस स्टैंड के विस्तार, नए थाने के निर्माण और नगर पालिका के नए भवन या अतिरिक्त परिसर के लिए उपयुक्त सरकारी भूमि की उपलब्धता की समीक्षा की। शहर के बीचों-बीच स्थित पुराने बस स्टैंड और प्रशासनिक भवनों के आसपास लगने वाले जाम को कम करने के लिए इन्हें अधिक जगह वाले इलाकों में स्थानांतरित या विस्तारित करने की संभावनाएं तलाशी जा रही हैं।

अधिकारियों की टीम रही साथ

इस तूफानी निरीक्षण के दौरान एसडीएम शिवानी पांडे, लोक निर्माण विभाग के कार्यपालन यंत्री के.एस. उड्डे के सहित नगर पालिका, राजस्व और पुलिस विभाग के कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे। प्रशासन की इस सक्रियता और बड़े बदलावों की योजना से यह स्पष्ट हो रहा है कि आने वाले समय में गुना न केवल सुंदर और व्यवस्थित दिखेगा, बल्कि वातायत के मामले में भी काफी सुगम और आधुनिक रूप में उभरकर सामने आएगा।



नरवाई जलाने पर प्रशासन ने लिया कड़ा एक्शन

मृदुभाषी, सिटी रिपोर्टर

गुना। कलेक्टर किशोर कुमार कन्याल के निदेशानुसार जिले में नरवाई (फसल अवशेष) जलाने की घटनाओं पर प्रभावी रोक लगाने के लिए कृषि एवं राजस्व विभाग के संयुक्त अमले ने त्वरित कार्रवाई की है। इस दौरान ग्राम झगार एवं धाननखेड़ी में खेतों में नरवाई जलाते पाए जाने पर चार किसानों पर कुल 12,500 रुपये का जुमाना लगाया गया।

कार्रवाई के तहत ग्राम झगार के किसान शिवम पुत्र अमोप्रकाश के किरार पर 5,000 रुपये का जुमाना लगाया गया। वहीं ग्राम धाननखेड़ी के किसान गोपाल पुत्र सीताराम, संतोष पुत्र विजय एवं जगदीश पुत्र राधेकिशन पर 2,500-2,500 रुपये का जुमाना ठोका गया।

प्रशासन की इस संयुक्त कार्रवाई के दौरान तहसीलदार बमोरी देवदत्त गोлияया, उपसंचालक

कृषि विभाग संजीव शर्मा, राजस्व निरीक्षक कालुराम मीना, एईओ निर्मल पंथी सहित राजस्व एवं कृषि विभाग का अमला मौके पर उपस्थित रहा। कार्रवाई के साथ ही कृषि विभाग द्वारा किसानों से अपील की गई है कि वे पर्यावरण और भूमि की उर्वरता को नुकसान पहुंचाने वाले फसल अवशेषों को कतई न जलाएं।

महानवमी पर आज रहेगा स्थानीय अवकाश

गुना। कलेक्टर किशोर कुमार कन्याल द्वारा वर्ष 2026 के लिए गुना जिले में तीन स्थानीय अवकाश घोषित किए गए हैं। इसी क्रम में कल महानवमी के अवसर पर 19 अक्टूबर सोमवार को पूरे जिले में स्थानीय अवकाश रहेगा। जिला प्रशासन द्वारा जारी आदेश के अनुसार, यह घोषित किया गया स्थानीय अवकाश जिले के कोषालय एवं उप कोषालयों के लिए लागू नहीं रहेगा।

समाजसेवी भार्गव की तत्परता से मिला बिछड़ा बेटा

मृदुभाषी, सिटी रिपोर्टर

गुना। समाजसेवी प्रमोद भार्गव के अनवरत प्रयासों और तत्परता के चलते अपने परिवार से बिछड़े दतिया जिले के ग्राम डगराई निवासी विकास अहिरवार की सकुशल उनके परिजनों से मिला दिया गया। काफी मशक्कत और खोजबीन के बाद जब विकास अपने परिजनों से मिले, तो माहौल बावुक हो उठा। अपने पिता को सही-सलामत देखकर विकास का पांच वर्षीय बेटा और पत्नी उनसे लिपटकर रो पड़े, वहीं परिवार के अन्य सदस्यों की आँखें भी खुशी के आंसुओं से भर आईं।

रविवार सुबह एबी रोड पर

समाजसेवी प्रमोद भार्गव को एक व्यक्ति घायल अवस्था में भटकाता दिखाई दिया। उसके सिर पर गंभीर चोट थी और कपड़े खून से सने थे। भार्गव ने जब उससे बात करने का प्रयास किया, तो वह डरकर भागने लगा। किसी तरह पूछताछ करने पर उसने अपना नाम विकास अहिरवार और निवासी ग्राम डगराई (दतिया) बताया। भार्गव ने तुरंत उस गाँव के पंचायत सचिव से संपर्क साधा, जिन्होंने पुष्टि की कि विकास काफी समय से लापता है और उसके परिजन उसे लगातार तलाश रहे हैं। सूचना मिलते ही परिजन दतिया से गुना के लिए रवाना हो गए। इधर, मानसिक अस्वस्थता और चोट के

कारण विकास एक जगह नहीं ठहर रहा था। प्रमोद भार्गव करीब दो घंटे तक लगातार उसके पीछे-पीछे उसकी लोकेशन ट्रैक करते रहे। कोतवाली थाना प्रभारी की मदद से विकास को थाने लाया गया, लेकिन वह वहाँ से भी निकल गया। विकास को उसके पिता जगदीश अहिरवार, भाइयों ब्रजेंद्र व आकाश, जीजा राजेंद्र, पत्न ी कृष्णा अहिरवार और भाभी प्रियंका अहिरवार को सुपुर्द कर दिया गया। प्रमोद भार्गव ने विकास के घावों के इलाज और नए कपड़ों की व्यवस्था करने के साथ-साथ पूरे परिवार के भोजन के साधन कराकर उन्हें दतिया के लिए रवाना किया।

रामलीला में विभीषण शरणागति, रामेश्वरम स्थापना और लंका प्रस्थान का हुआ भव्य मंचन

मृदुभाषी, सिटी रिपोर्टर

अशोकनगर। स्थानीय सुभाषगंज स्थित रामलीला मंच पर श्री गया प्रसाद कलाकार मंडल द्वारा आयोजित रामलीला के 12वें दिन की लीला का मंचन रात्रि 9 बजे प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ रामायण जी, भगवान गणेश जी, भगवान श्रीराम-लक्ष्मण जी एवं हनुमान जी की आरती के साथ हुआ। आरती दशहरा शक्ति समिति के अध्यक्ष श्री राव देशराज सिंह, जय मंडल यादव एवं उनके साथियों द्वारा की गई।

लीला के प्रथम प्रसंग में हनुमान जी माता सीता की खोज की सूचना लेकर भगवान श्रीराम की सूचना लेकर भगवान श्रीराम अपनी सेना के साथ लंका की ओर प्रस्थान करते हैं। समुद्र के किनारे पहुंचकर विशाल जलराशि को पार करने की चिंता सामने



आती है। इसी बीच लंका में रावण को श्रीराम की सेना के समुद्र तट तक पहुंचने की सूचना मिलती है। रावण की पत्नी मंदोदरी उसे समझाने का प्रयास करती हैं, लेकिन अहंकार में डूबा रावण उनकी बात नहीं मानता। इसके बाद रावण अपनी सभा में बैठता है, जहां उसका भाई विभीषण उसे भगवान श्रीराम से वैर त्यागकर माता सीता को सम्मानपूर्वक वापस लौटाने की सलाह देता

कर लेते हैं और भविष्य में लंका का राजा घोषित करते हैं। अगले प्रसंग में रावण अपने दूतों को श्रीराम की सेना की गतिविधियों का पता लगाने के लिए भेजता है। गुप्त रूप से सेना में शामिल होकर जानकारी जुटाने वाले दूतों को पकड़ लिया जाता है और लक्ष्मण जी के माध्यम से उन्हें संधि दिया जाता है।

वापस लौटकर दूत रावण को श्रीराम की सेना की तैयारियों की जानकारी देते हैं। इसके पश्चात भगवान श्रीराम समुद्र तट पर भगवान भोलेनाथ की पूजा-अर्चना कर रामेश्वरम की स्थापना करते हैं। पूजा संपन्न होने के बाद भगवान श्रीराम अपनी वानर सेना के साथ समुद्र पार करने के लिए आगे बढ़ते हैं। वानर सेना के समुद्र पार कर लंका की ओर प्रस्थान करने का दृश्य मंच पर बेहद आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया।